**रविवार 31 अक्टूबर, 2021**

## *विषय* — हमेशा की सजा

## *स्वर्ण पाठ:* अय्यूब 5 : 17

"देख, क्या ही धन्य वह मनुष्य, जिस को ईश्वर ताड़ना देता है; इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान।"

## उत्तरदायी अध्ययन: इब्रानियों 12 : 6-8, 11-13

6 क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है।
7 तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता?
8 यदि वह ताड़ना जिस के भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!
11 और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।
12 इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो।
13 और अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए॥

## पाठ उपदेश

### *बाइबल*

### 1. मीका 6 : 8

8 हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

### 2. भजन संहिता 1 : 1-6

1 क्याही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है!

*इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।*

2 परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।
3 वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिये जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है॥
4 दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है।
5 इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे;
6 क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा॥

## 3. 1 राजा 16 : 29 (*से*:), 30-33

29 यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल पर राज्य करने लगा।
30 और ओम्री के पुत्र अहाब ने उन सब से अधिक जो उस से पहिले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे।
31 उसने तो नबात के पुत्र यारोबाम के पापों में चलना हलकी सी बात जानकर, सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईजेबेल को ब्याह कर बाल देवता की उपासना की और उसको दण्डवत किया।
32 और उसने बाल का एक भवन शोमरोन में बनाकर उस में बाल की एक वेदी बनाईं।
33 और अहाब ने एक अशेरा भी बनाया, वरन उसने उन सब इस्राएली राजाओं से बढ़ कर जो उस से पहिले थे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के काम किए।

## 4. 1 राजा 17 : 1

1 और तिशबी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियों में से था उसने अहाब से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।

## 5. 1 राजा 21 : 17, 18 (*से*:), 20-22, 27-29 (*से*:)

17 तब यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्यह के पास पहुंचा, कि चल,
18 शोमरोन में रहने वाले इस्राएल के राजा अहाब से मिलने को जा; वह तो नाबोत की दाख की बारी में है, उसे अपने अधिकार में लेने को वह वहां गया है।
20 एलिय्याह को देख कर अहाब ने कहा, हे मेरे शत्रु! क्या तू ने मेरा पता लगाया है? उसने कहा हां, लगाया तो है; और इसका कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिये तू ने अपने को बेच डाला है।
21 मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूंगा, कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूंगा; और अहाब के घर के एक एक लड़के को उौर क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहने वाले को भी नाश कर डालूंगा।
22 और मैं तेरा घराना नबात के पुत्र यारोबाम, और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर दूंगा; इसलिये कि तू ने मुझे क्रोधित किया है, और इस्राएल से पाप करवाया है।

27 एलिय्याह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े, और अपनी देह पर टाट लपेट कर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा, और दबे पांवों चलने लगा।
28 और यहोवा का यह वचन तिशबी एलिय्याह के पास पहुंचा,
29 कि क्या तू ने देखा है कि अहाब मेरे साम्हने नम्र बन गया है? इस कारण कि वह मेरे साम्हने नम्र बन गया है मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूंगा पर न्तू उसके पुत्र के दिनों में मैं उसके घराने पर वह पिपत्ति भेजूंगा।

## 6. भजन संहिता 2 : 1-5, 10, 11

1 जाति जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं, और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं?
2 यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरूद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर, और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं, कि
3 आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रस्सियों अपने ऊपर से उतार फेंके॥
4 वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसेगा, प्रभु उन को ठट्ठों में उड़ाएगा।
5 तब वह उन से क्रोध करके बातें करेगा, और क्रोध में कहकर उन्हें घबरा देगा, कि
10 इसलिये अब, हे राजाओं, बुद्धिमान बनो; हे पृथ्वी के न्यायियों, यह उपदेश ग्रहण करो।
11 डरते हुए यहोवा की उपासना करो, और कांपते हुए मगन हो।

## 7. रोमियो 7 : 18-20, 22-25 (*से 1st* .)

18 क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।
19 क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं।
20 परन्तु यदि मैं वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है।
22 क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं।
23 परन्तु मुझे अपने अंगो में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।
24 मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?
25 मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं: निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं॥

## 8. 1 शमूएल 16 : 7 (के लिए)

7 … क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।

## 9. भजन संहिता 34 : 18-22

18 यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है॥
19 धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है।
20 वह उसकी हड्डी हड्डी की रक्षा करता है; और उन में से एक भी टूटने नहीं पाती।
21 दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा जाएगा; और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे।
22 यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है; और जितने उसके शरणागत हैं उन में से कोई भी दोषी न ठहरेगा॥

## 10. भजन संहिता 94 : 12

12 हे याह, क्या ही धन्य है वह पुरूष जिस को तू ताड़ना देता है, और अपनी व्यवस्था सिखाता है॥

### *विज्ञान और स्वास्थ्य*

### 1. 35 : 30-1

प्रेम की योजना पापी को सुधारना है। यदि यहाँ पापी की सजा उसे सुधारने के लिए अपर्याप्त है, तो अच्छे आदमी का स्वर्ग पापी के लिए नर्क होगा।

### 2. 36 : 4-6, 7-9

ईश्वरीय विज्ञान पाप के प्रेम को बुझाने के लिए, मृत्यु से पहले या बाद में, पर्याप्त पीड़ा की आवश्यकता को प्रकट करता है। ... सजा से बचना भगवान की सरकार के अनुसार नहीं है, क्योंकि न्याय दया की दासी है।

### 3. 104 : 29-2

हमारी अदालतें अपराध के मकसद के साथ-साथ आयोग को साबित करने के लिए सबूतों को पहचानती हैं। क्या यह स्पष्ट नहीं है कि मानव मन को शरीर को दुष्ट कार्य की ओर ले जाना चाहिए? क्या नश्वर मन हत्यारा नहीं है? हाथ, नश्वर मन के बिना उन्हें निर्देशित करने के लिए, हत्या नहीं कर सकते थे।

### 4. 105 : 13-15

नश्वर मन, कोई बात नहीं, हर मामले में अपराधी है; और मानव कानून अपराध का सही अनुमान लगाता है, और अदालतें मकसद के अनुसार उचित रूप से सजा सुनाती हैं।

### 5. 542 : 1-13

मामले में जीवन का विश्वास हर कदम पर पाप करता है। यह ईश्वरीय नाराजगी को जन्म देता है, और यह यीशु को मार देगा कि वह परेशानी से छुटकारा दिला सकता है। भौतिक मान्यताएँ जब भी और जहाँ भी दिखाई देती हैं, आध्यात्मिक विचार को मार डालती हैं। यद्यपि त्रुटि एक झूठ के पीछे छिपती है और अपराधबोध का बहाना करती है, लेकिन त्रुटि को हमेशा के लिए छुपाया नहीं जा सकता। सत्य, उसके अनन्त कानूनों के माध्यम से, त्रुटि का खुलासा करता है। सत्य पाप को धोखा देने का कारण बनता है, और त्रुटि को जानवर के निशान पर सेट करता है। यहां तक कि अपराध को छुड़ाने के लिए या उसे छुपाने के लिए सजा दी जाती है। न्याय से बचना और सच्चाई को नकारना पाप को खत्म करने, अपराध को खत्म करने, आत्म-नियंत्रण को खतरे में डालने और ईश्वरीय दया का मजाक उड़ाने के लिए है।

### 6. 105 : 22-27

जो कोई भी अपनी विकसित मानसिक शक्तियों का उपयोग भागे हुए अपराधी की तरह ताजा अत्याचार करने के लिए करता है जैसे अवसर मिलता है वह कभी भी सुरक्षित नहीं होता है। भगवान उसे गिरफ्तार कर लेंगे। ईश्वरीय न्याय उसे संभाल लेगा। उसके पाप उसकी गर्दन के चारों ओर चक्की के पाट होंगे, जो उसे अपमान और मृत्यु की गहराई तक तौलेंगे।

### 7. 266 : 20-21, 26-27

पापी बुराई करके अपना नरक बनाता है, और अच्छाई करने से पवित्र आदमी अपना स्वर्ग बनाता है।

नश्वर में उत्पन्न होने वाली बुरी मान्यताएं नरक हैं।

### 8. 196 : 6-10

इस सपने को कायम रखने वाले झूठे सुखों से बेहतर है कि वह दुख जो नश्वर मन को उसके शारीरिक सपने से जगाए। पाप ही मृत्यु लाता है, क्योंकि पाप ही विनाश का एकमात्र तत्व है।

### 9. 447 : 20-27

उनके सभी रूपों में बुराई और बीमारी के दावों को बेनकाब और उनकी निंदा करें, लेकिन उनमें कोई वास्तविकता का एहसास न करें। एक पापी को केवल यह आश्वासन देकर सुधारा नहीं जाता है कि वह पापी नहीं हो सकता क्योंकि कोई पाप नहीं है। पाप के दावे को कम करने के लिए, आपको इसका पता लगाना होगा, मुखौटा हटाना होगा, भ्रम को इंगित करना होगा, और इस तरह पाप पर विजय प्राप्त करनी होगी और इस तरह इसकी असत्यता को साबित करना होगा।

### 10. 327 : 1-13 (*से 2nd* .), 22-3

सुधार यह समझने से होता है कि बुराई में कोई खुशी नहीं है, और विज्ञान के अनुसार अच्छे के लिए स्नेह प्राप्त करने से भी, जो अमर तथ्य को उजागर करता है कि न तो खुशी और न ही दर्द, भूख और न ही जुनून, या बात में मौजूद हो सकता है, जबकि दिव्य मन आनंद और पीड़ा, या भय और मानव मन के सभी पापी भूखों की झूठी मान्यताओं को नष्ट कर सकता है।

बदला लेने की खुशी में, क्या दयनीय दृष्टि दुर्भावना है! बुराई कभी-कभी किसी व्यक्ति के अधिकार की सबसे बड़ी अवधारणा होती है, जब तक कि अच्छाई पर उसकी पकड़ मजबूत नहीं हो जाती। तब वह दुष्टता में आनंद खो देता है, और यह उसकी पीड़ा बन जाती है। पाप के दुख से बचने का तरीका है, पाप को रोकना। और कोई रास्ता नहीं है।

सजा के डर ने कभी भी इंसान को सही मायने में ईमानदार नहीं बनाया। गलत को पूरा करने और सही की घोषणा करने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है। लेकिन हम उस आदमी को कैसे सुधारेंगे जिसके पास नैतिक साहस से अधिक जानवर हैं, और अच्छे का सही विचार किसके पास नहीं है? मानव चेतना के माध्यम से, भौतिक लाभ के लिए अपनी गलती के नश्वर को खुशी पाने के लिए मनाएं कारण सबसे सक्रिय मानव संकाय है। यह बताएं कि भावनाओं को सूचित करें और नैतिक दायित्व के प्रति व्यक्ति की निष्क्रिय भावना को जागृत करें, और डिग्री के आधार पर वह मानव भावना के सुख और आध्यात्मिकता की भव्यता और आनंद की कुछ नहीं सीखेंगे जो सामग्री या कॉर्पोरल को शांत करता है तब वह न केवल बच जाएगा, बल्कि बच जाता है।

### 11. 253 : 18-21, 25-31

यदि आप जानबूझकर गलत में विश्वास करते हैं और अभ्यास करते हैं, तो आप तुरंत अपना पाठ्यक्रम बदल सकते हैं और सही कर सकते हैं। पदार्थ पाप या बीमारी के खिलाफ सही प्रयासों के लिए कोई विरोध नहीं कर सकता, क्योंकि यह जड़ता, नासमझी है।

पाप, बीमारी, या मृत्यु के लिए किसी भी आवश्यक आवश्यकता पर विश्वास नहीं करना, जानना (जैसा कि आप जानना चाहते हैं) कि भगवान को कभी भी एक तथाकथित भौतिक कानून के लिए आज्ञाकारिता की आवश्यकता नहीं होती है, ऐसा कोई कानून मौजूद नहीं है। पाप और मृत्यु में विश्वास ईश्वर के कानून द्वारा नष्ट हो जाता है, जो मृत्यु के बजाय जीवन का नियम है, कलह के बजाय सद्भाव का, मांस के बजाय आत्मा का।

### 12. 542 : 19-24

सत्य को ईश्वर के अपने तरीके से त्रुटि को उजागर करने और नष्ट करने दें, और मानव न्याय को ईश्वरीय स्वरूप दें। पाप को उसका पूरा दंड मिलेगा, दोनों के लिए कि वह क्या है और जो वह करता है। न्याय पापी को चिन्हित करता है, और नश्वर लोगों को सिखाता है कि वे ईश्वर के मार्ग के निशान को न हटाएं।

### 13. 323 : 6-12

प्रेम के उत्तम उदाहरणों के माध्यम से, हमें धार्मिकता, शांति और पवित्रता की ओर अग्रसर होने में मदद मिलती है, जो विज्ञान के स्थल हैं। सत्य के अनंत कार्यों को निहारते हुए, हम विराम देते हैं, - भगवान की प्रतीक्षा करें। तब हम आगे की ओर धकेलते हैं, जब तक कि असीम विचार चलता नहीं है, और गर्भाधान से अपरिभाषित दैवीय महिमा तक पहुंचने के लिए पंख लगा हुआ है।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 4

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 1

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव

करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

*चर्च मैनुअल,* लेख VIII, अनुभाग 6